श्री राम चंद्र मिशन
केवल निजी वितरण के लिए
ECHOES INDIA
नवम्बर २०१३ खंड ६, अंक ६

सितंबर २०१३

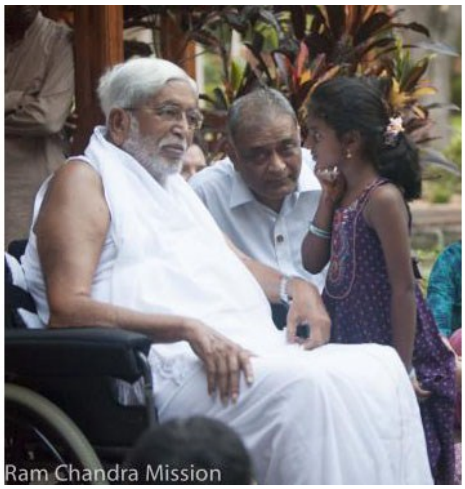

बेलारूस में मिंस्क आश्रम का उद्घाटन

एक सितंबर, रविवार, को मालिक ने हमेशा की तरह गीता सत्र में भाग लिया। सत्र के बाद मालिक कार्यालय कक्ष में आये और यह सुनिश्चित किया कि मणपाक्कम में उपस्थित सभी रुसी अभ्यासी और एल.एम.ओ.आई.एस (लालाजी मेमोरिअल ओमेगा इंटरनेशनल स्कूल) में पढ़ने वाले रुस के विद्यार्थी जो इस कार्यक्रम के लिये आये हैं वो सभी वहां उपस्थित हैं। वीडिओ लिंक के द्वारा मिंस्क के अभ्यासियों से बात की और कहा, "हमारे लिये, यही रुसी आश्रम है और भविष्य में हमारे और भी आश्रम होंगे।" उन्होंने यह भी कहा कि उनका स्लाव लोगों से लंबे समय से सम्बंध रहा है, हो सकता है पूर्व जन्मों से भी हो। उन्होंने रुस की यात्रा की अपनी इच्छा व्यक्त की ताकि वे उन सब से एक बार फिर मिल सकें, "क्योंकि, मैं दोहरा रहा हूँ, कि मैं आप सब से बार बार मिलना पसन्द करता हूँ।" मालिक ने कहा कि लगभग आधा दर्जन रुसी बच्चे ओमेगा स्कूल में पढ़ रहे हैं और कहा, "मैं चाहता हूँ ज्यादा से ज्यादा आयें।" वार्ता के अन्त में उन्होंने सत्संग करवाया और उस के बाद रुसी बोलने वाले सभी अभ्यासियों में प्रसाद बाँटा।

मालिक का स्वास्थ्य सुधर रहा था और एक दिन वे वाकर की सहायता से कॉटेज के बाहर आये और वहां बैठे। यह बहुत दिनों के बाद हुआ था कि मालिक चलने की स्थिति में थे और बाहर आये।

मालिक इतिहास लिखने वाली टीम की ओर ज्यादा ध्यान और समय दे रहे थे। उन्होनें उनसे कहा, "आओ और मुझसे सहज मार्ग के इतिहास के बारे में प्रश्न पूछो और मैं, जितना सम्भव होगा, उत्तर दूंगा।" तो प्रतिदिन यह टीम सुबह कुटिया में आती थी। मालिक ९ बजे तक तैयार हो जाते थे। वे ध्यान कराते और फ़िर प्रश्न उत्तर का सत्र शुरु होता जो एक घंटे से अधिक समय तक चलता। मालिक को इस विचार विमर्श में इतना डूब कर भागीदारी करते हुए देखना, एक एहसास था। वहां उपस्थित सभी अपने आप ही डूब कर भागीदार बन जाते थे। बातचीत में जो जिज्ञासा और उत्साह वे अपनाते हैं वह सीखने लायक है और अपने जीवन में उतारने लायक है। वे दूसरों को प्रेरित करने के

लिए विशेष रूप से कुछ नहीं करते परंतु उनका स्वयं प्रेरित हो जाना उनके आसपास के लोगों पर प्रभाव डालता है।

रविवार को भाई कमलेश द्वारा सामान्य दिनचर्या के अनुसार सत्संग आयोजित किया गया तथा कॉटेज प्रांगण में भाई संस्कृत कन्नन द्वारा चलाए जा रहे गीता सत्र निरन्तर जारी हैं। गीता का द्वितीय भाग जो ज्ञान से सम्बन्धित है, प्रगति पर है। इन सत्रों की उपस्थिति में वृद्धि हुई है और मालिक का सान्निध्य चाहने वाले और सत्र में उपस्थित होने वाले अभ्यासियों की लम्बी कतार प्रात: ९ बजे से देखी जा सकती है।

११ सितम्बर, बुधवार, को मालिक ने आश्रम के ठीक पीछे स्थित डॉ. नटवर के मकान का उद्घाटन किया। वे मकान की ओर गए ओर फिर वहाँ एकत्रित लगभग ४०० अभ्यासियों के लिए करीबन ४५ मिनट तक सत्संग आयोजित किया। यह एक कृपापूर्ण अवसर था। मालिक कॉटेज में दोपहर पश्चात् विलम्ब से पहुँचे। साँयकाल उन्होंने कॉटेज में एकत्रित लोगों के लिए पुन: सत्संग आयोजित किया ।

१२ सितम्बर, गुरुवार, माधुरी का जन्म दिवस होने से मालिक ने उससे मिलने हेतु 'गायत्री' जाने की इच्छा व्यक्त की क्योंकि वह घुटने की शल्य चिकित्सा के पश्चात् स्वास्थ्य लाभ ले रही थी। 'गायत्री' में उन्होंने माधुरी एवं अपने परिवार के साथ समय व्यतीत किया । वे हॉल में बैठकर प्रत्येक से वार्ता कर रहे थे। मालिक ने कहा, "मेरी पौत्री के जन्म दिवस पर यहाँ आने से सबसे प्रसन्न व्यक्ति मैं हूँ।"

ओनम् समारोह

१६ सितम्बर, सोमवार को ओनम् उत्सव था। लगभग ३५० अभ्यासी केरल से यहाँ आए थे। प्रात:काल मालिक ने कॉटेज के सामने अभ्यासियों द्वारा बनाई गई फूलों की कलात्मकता को ध्यानपूर्वक देखते हुए कुछ समय व्यतीत किया। मालिक ने सबको शुभकामनाएं दी, "शुभ ओनम्"। प्रात: ९ बजे वे डॉर्म 'ए' में सत्संग आयोजित कराने आए, जहाँ अभ्यासी एकत्रित हुए थे। सत्संग से पूर्व उन्होंने धार्मिक प्रथाओं एवं व्यक्तियों के विश्वास पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि कोई हिन्दू, इसाई या मुस्लिम नहीं है, बल्कि हम सभी मानव प्राणी हैं। प्रेम ही सबसे महत्वपूर्ण पहलू है और यही एकमात्र उपकरण है जो ऐसे सभी विश्वासों को नियन्त्रित कर सकता है। मालिक ने कहा कि प्रत्येक अभ्यासी सहज मार्ग का सन्देशवाहक है और प्रशिक्षक तथा अभ्यासी में कोई अन्तर नहीं है और प्रत्येक को मिशन के विकास के लिए कार्य करना है। दोपहर में रसोईघर में एक विशेष ओनम् व्यंजन बनाया गया और कॉटेज में भेजा गया जिसे मालिक ने भी ग्रहण किया।

◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆

१८ सितम्बर को मालिक उस दिन प्रात: अस्वस्थ होने के उपरान्त भी, भाई सतबीर के 'गार्डन ऑफ हार्ट्स' स्थित घर पहुँचे। चिकित्सकों ने परमर्श दिया कि वे वापस जाएँ और कॉटेज में चल रहे मरम्मत कार्य स्थगित कर दें। मालिक ने दृढ़तापूर्वक कहा कि वे चाहते थे कि कार्य योजनानुसार पूर्ण किया जाए। मालिक यदि एक बार किसी बात का निर्णय कर लेते हैं तो उन्हें मनाना अत्यन्त कठिन है, भले ही वह उनके लिए असुविधाजनक हो।

सतबीर के घर में प्रथम एक–दो दिन मालिक ने प्रात: सत्संग आयोजित किया, किन्तु उन्होंने देखा कि कई अभ्यासी ध्यान कक्ष में जाने की बजाय वहीं आ रहे थे तो वे क्षुब्ध हुए। उन्होंने प्रत्येक अभ्यासी को ध्यान कक्ष में यह कहते हुए जाने को कहा, "आप जहाँ कहीं भी सत्संग में उपस्थित रहेगें आपको वही प्राणाहुति प्राप्त होगी ।"

२१ सितम्बर, शनिवार : मालिक 'गायत्री' गए। वे प्रसन्न थे, परिवार के प्रत्येक सदस्य से बात कर रहे थे और सीधे अल्पाहार की मेज तक गए। अल्पाहार के पश्चात् मालिक उनके कार्यालय गए, कुछ कार्य किया और स्वयं के कम्प्यूटर पर साक्षात्कार सत्रों को ध्यान से देखा।

फ़िर गुरुदेव कुछ अभ्यासियों से मिले और उन्होंने हरेक को सिटिंग देने का निश्चय किया। गुरुदेव को अमरीका से एक नई पहियेदार कुर्सी

प्राप्त हुई है जो अधिक उन्नत स्तर की है और उसके सभी सेटिंग मर्ज़ी के अनुसार प्रयोग करने लायक हैं। गुरुदेव उसे आज़माकर प्रसन्न थे।

भोजन के उपरान्त गुरुदेव आए और दालान में बैठे जहाँ यूरोप से आए अभ्यासियों का समूह एकत्रित हुआ था। जब गुरुदेव ने श्वास अवरोध की शिकायत की तब डेन्मार्क से आई एक बहन ने उन्हें एक तकनीक सिखाई जिसने चमत्कार का काम किया और गुरुदेव की साँस पाँच मिनट के अन्दर बेहतर हो गई। शाम को गुरुदेव ने आश्रम में हरेक को यह सूचित करने के लिए कहा कि वे 'गायत्री' विश्राम करने आए थे।

रविवार, २२ सितम्बर को गुरुदेव ने 'गायत्री' में सत्संग कराया और हॉल में कुछ विवाह करवाए तथा नव विवाहित जोड़ों को आशीर्वाद दिया।

अगले दो दिन गुरुदेव पश्चिमी चेन्नई से लगभग ४५ किलो मीटर दूर तिरुवल्लुर में मिशन के वास्ते ज़मीन की ख़रीदारी में व्यस्त थे। सब परिवारों के सदस्य जो ज़मीन के मालिक थे, 'गायत्री' आए। गुरुदेव सबसे व्यक्तिगत तौर पर मिले। उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि वे सभी भोजन करें। क़रारनामों और विक्रय-पत्रों पर हस्ताक्षर करना एक बहुत बड़ा काम था जिसमें लगभग ३०० हस्ताक्षर करने थे। गुरुदेव ने सभी दस्तावेज़ों पर ध्यान देते हुए दो दिन देर रात तक काम करते हुए यह कार्य अन्ततः पूर्ण किया और यह सब काम करते हुए उनके चेहरे पर एक मुस्कान बनी रही। गुरुदेव ने यह सब करते हुए वास्तविक रूप से आनन्द लिया और हमें सिखाया कि जब हम किसी काम को करने में आनन्द लेते हैं तब वह काम कष्टप्रद नहीं रहता।

शनिवार, २८ सितम्बर को गुरुदेव आश्रम वापस आए। नवम्बर में एक यूरोपीय गोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है और विषय है, 'अज्ञान से ज्ञात तक और ज्ञात से अज्ञात तक'। गुरुदेव इस विषय में बहुत लीन रहे और चर्चा इच्छा शक्ति एवं चिन्तन पर चली। गुरुदेव ने कहा,"इच्छा शक्ति जानने और करने के बीच की कड़ी है। 'औडे सपेरे'(चिन्तन करने की हिम्मत करो) किन्तु जब आप चिन्तन करने का साहस करते हैं आप को वैसा ही करना भी चाहिए और उसके लिए आपको इच्छा शक्ति की आवश्यकता है। जब आप अपनी इच्छा शक्ति का प्रयोग करते हैं तब आपके पास विकल्प कम रह जाते हैं। यह आपको सादे जीवन की ओर ले जाता है। तो देखिए, इस प्रकार हमारी इच्छा शक्ति का प्रयोग करते हुए और विकल्पों को कम करते हुए, सादे बने रहना और प्रकृति के साथ हिलमिल कर रहना संभव हो जाता है। सादा जीवन जीना आसान नहीं है।"

तिरुवल्लुर को भेंट

पिछले कुछ दिनों में पश्चिमी चेन्नई से ४५ किलो मीटर दूर तिरुवल्लुर ज़िले में ११३ एकड़ ज़मीन का एस्.एम्.एस्.एफ़्. के नाम पंजीकरण किया गया। गुरुदेव इस स्थल को भेंट देना चाहते थे। भाई विनय कृष्णा के नेतृत्व में रात भर में ध्यान के लिए एक शामियाने का, गुरुदेव के लिए तम्बू का और अभ्यासियों के लिए वहनीय शौचालयों का प्रबन्ध किया गया। चेन्नई और तिरुवल्लुर के आसपास के इलाकों से लगभग ३०० अभ्यासी वहाँ एकत्रित हुए थे

२८ सितम्बर को लगभग ८:३० बजे सुबह गुरुदेव अपनी मर्सीडिस गाड़ी में जिसमें विशेष कुर्सी संलग्न की गई थी, कार्यक्रम स्थल आ पहुँचे। उन्होंने प्रसाद चढ़ाया और ध्यान कक्ष आए। उन्होंने लगभग ४५ मिनट तक सिटिंग दी और जमाव को संबोधित किया। उन्होंने ज़मीन के प्रयोग पर प्रकट रूप से सोचा-एक स्वास्थ्य केन्द्र, एक ध्यान कक्ष, डेयरी फ़ार्मिंग इत्यादि। उन्होंने कहा कि फ़िर भी मुख्य क्रिया-कलाप ध्यान ही रहेगा। तिरुवल्लुर ज़िले के कलक्टर भाई वीर राघव राव ने जो एक नए अभ्यासी हैं, ज़िला प्रशासन की ओर से सभी प्रकार की सहायता का वचन दिया। जिन्होंने ज़मीन बेची थी ऐसे परिवारों के लगभग ३० सदस्य आए और गुरुदेव से मिले जिन्होंने उन्हें प्रसाद दिया और उनके साथ फ़ोटो खिंचवाया। अभ्यासी एक चॉकलेट केक लाए थे जिसे गुरुदेव ने काटा और सबको बाँटा। यद्यपि गुरुदेव के आराम के लिए प्रबन्ध किया गया था, उन्होंने आराम नहीं किया बल्कि अपनी पहियेदार कुर्सी पर बैठे रहे और अपना नाश्ता किया। अधिगृहीत इलाके की सारी ज़मीन पर धान, केले और नारियल के पेड़ों की कृषि की गई है और यह पूरी तरह से हरी-भरी दिखती है। यहाँ अच्छी संख्या में खुले कुएँ और बोरवेल हैं। सीमित मौजूद रास्तों में वे जहाँ तक जा सकते थे वहाँ तक जाकर गुरुदेव ने ज़मीन का सर्वेक्षण किया और बाद में चेन्नई के लिए रवाना हुए।

२९ सितम्बर को गीता सत्र समाप्त होने पर मालिक कुछ देर बोले। उन्होनें कहा, "अब जब हमनें इस प्रकार के कई सत्रों में भाग ले लिया है और भाई संस्कृत कन्नन ने श्लोकों को विस्तार से

समझाया है, यह समय हमारे लिये इसको शोषित करके पचाने का है। इसलिये अगले दो रविवार हम प्रश्नोत्तर सत्र रखेंगे।"

अक्टूबर २०१३

चीनी सेमिनार

मंगलवार १ अक्टूबर: करीब ११० चीनी और दूसरे देशों मे रहने वाले चीनी अभ्यासी एक सेमिनार में शामिल होने के लिये मणपाक्कम आश्रम में रुके। मालिक इस सेमिनार का उत्सुकता से इंतज़ार कर रहे थे। अपने कमरे से बाहर आने के पहले, उन अभ्यासियों का अभिवादन करने के लिये जो कॉटेज़ के बाहर सुबह करीब ८.३० बजे से एकत्रित हुए थे मालिक ने तुरन्त चाइनीज़ के कुछ शब्द सीख लिये। जैसे ही वे चलकर बाहर आये, वे चाइनीज़ में बोले जिससे तालियों की गड़गड़ाहट गूंज गयी। मालिक ने ख़ेद प्रदर्शित किया कि वे चाइनीज़ नहीं सीख पाये और कहा कि अब सीखने के लिये या चीन की यात्रा करने के लिये उनकी उम्र ज़्यादा हो चुकी है। मालिक ने कहा कि ज़्यादा से ज़्यादा चीनी अभ्यासियों को प्रतिवर्ष चेन्नई आने की कोशिश करनी चाहिये। उन्होंने गंगटोक आश्रम (सिक्किम,भारत में) का ज़िक्र किया और कहा कि रिट्रीट के लिये वह एक अच्छा स्थान है और अभ्यासियों को इस सुविधा का उपयोग करना चाहिये। मालिक ने उसके बाद सिटिंग दी। अभ्यासियों को सेमिनार में शामिल होने के लिये डॉर्म 'ए' में जाने के लिये कहा गया।

अगले दिन मालिक अपनी मोटर चालित व्हील चेयर से बहन गीतू के घर का उद्घाटन करने गये। सेमिनार के प्रत्याशी भी आमन्त्रित थे। वे शाम तक कॉटेज़ में लौटे। चूंकि मालिक अपनी व्हील चेयर में काफ़ी घूम फिर रहे थे, इससे उनके पैरों मे छाले हो गये। इन छालों के फूट जाने से उनके पैरों में तीव्र दर्द था। डॉक्टरों को उनकी त्वचा का कुछ भाग निकालना पड़ा और मालिक को अपने पैरों को घाव भरने तक ऊपर रखना पड़ा। जानते हुए कि वे पहले ही कितना सह रहे थे, उन्हें एक नई समस्या से जूझते देखना दुख:दायी था।

४ अक्टूबर को भाई पी. आर. कृष्णा दूसरे अभ्यासियों के साथ हाल ही में मिशन द्वारा ली गई ज़मीन का मुआयना करने और उस पर प्राथमिक योजना बनाने के लिये गये। मालिक ने कहा कि उस प्रॉपर्टी पर किये जा रहे प्रयासों को भाई पी. आर. कृष्णा नियंत्रित करेंगे, जिसे मालिक कुछ समय के लिये खेती पर केंद्रित रखना चाहते हैं।

शनिवार को सुबह मालिक ने सेमिनार में आये प्रत्याशियों से मिलने की योजना बनायी थी लेकिन उनकी अस्वस्थता के कारण, वे बाहर नहीं आ पाये लेकिन वे करीब २० प्रत्याशियों से धैर्यपूर्वक मिले जो उसी दिन लौट रहे थे। तब भाई कमलेश ने बचे हुए प्रत्याशियों को डॉर्म 'ए' में सत्संग कराया और वार्ता दी।

रविवार को चूंकि मालिक स्वस्थ नहीं थे, उन्होंने भाई कमलेश को ध्यान कक्ष में और भाई पी. आर. कृष्णा को कॉटेज में सेमिनार प्रत्याशियों को सत्संग कराने के लिये कहा। सत्संग समाप्त होने पर सेमिनार प्रत्याशियों के साथ कुछ समय बिताने के लिये मालिक बाहर आये। पूरा वातावरण उनके प्रेम से सराबोर था और कई अभ्यासियों को आंसू आ रहे थे। मालिक ने अभ्यासियों के हृदयों को गहराई से छू लिया गया था।

मालिक ने किचन टीम को मिठाइयां और डंपलिंग बनाने और एकत्रित सभी में वितरित करने के लिये कहा।

इसके साथ ही चाइनीज़ और विएतनामी अभ्यासियों ने एक छोटा सा

सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। वातावरण ख़ुशनुमा होने के साथ ही साथ प्रबल भी था। कोई भी महसूस कर सकता था कि मालिक ने इस सत्र में अपना सब कुछ दे दिया है। अपनी अस्वस्थता के बावज़ूद मालिक ने उन अभ्यासियों के साथ समय बिताया जो कॉटेज में आये थे और उसी दिन लौट रहे थे।

चाईनीज भाषा के बारे में गुरुदेव ने कहा कि जब एक बार आप मूड में आ जाते हैं तो फिर कोई भी भाषा सीख सकतें हैं। मैं अब चाईनीज सीख रहा हूँ। अंग्रेजी भाषा में ५२ स्वर–शैलियाँ हैं, जबकि चीनी भाषा में केवल ४ स्वर–शैलियाँ हैं। चीनी भाषा रूचिकर और अत्यधिक अर्थपूर्ण है। उदाहरण के लिए, चीनी भाषा में 'प्रसन्न' को दो लक्षणों से लिखा जाता है, जिसका वास्तविक अर्थ है– 'अपना हृदय खोलो'।

सोमवार, ७ अक्टूबर, को चीनी विचार–गोष्ठी का अंतिम दिन था। गुरुदेव ने प्रतिभागियों को करीब ४५ मिनिट तक ध्यान कराया। ध्यान कराने के बाद गुरुदेव काफ़ी थक गए थे, किन्तु फिर भी वे कुछ अभ्यासियों से मिले, उनका अभिनन्दन किया तथा फिर विश्राम करने के लिए अपने कक्ष में चले गए। शाम को कान्हा परियोजना पर कार्य कर रहे अभ्यासी आए। गुरुदेव उनसे मिले तथा उन्हें ध्यान कराया।

"हर एक के पास जीवन है किन्तु हमें जीवन के अंदर जीवन को तलाशना है जो अंतत: अपने स्वयं के सार में विलीन हो जाता है।"

कंप्लीट वर्क्स ऑफ रामचंद्र
खण्ड ३, पृष्ठ १४७

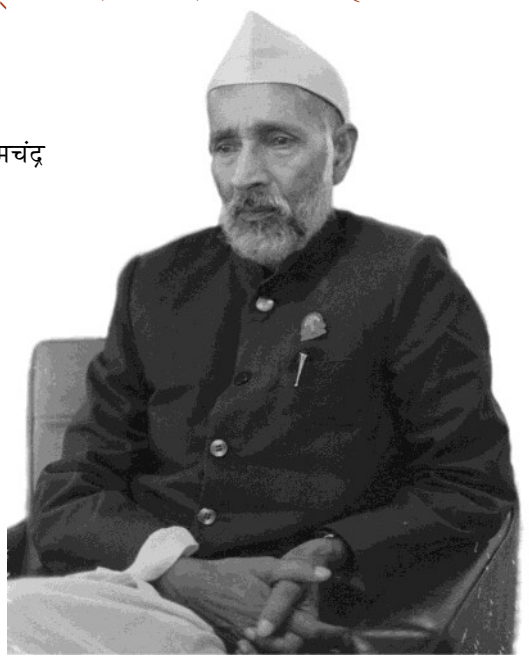

भाई कमलेश पटेल की गुजरात यात्रा

भाई कमलेश ११ सितम्बर को अहमदाबाद पहुँचे। वैसे तो इसे भाई कमलेश की व्यक्तिगत यात्रा घोषित किया गया था, किन्तु इस यात्रा के दौरान वे गुजरात के कई मुख्य केन्द्रों में गए। १५ सितम्बर को उन्होंने अहमदाबाद के अदलाज आश्रम में सत्संग कराया जहाँ करीब ९०० अभ्यासी एकत्रित हुए थे। उन्होंने एक वार्ता भी दी जिसमें उन्होंने नि–यमित साधना पर बल दिया। उन्होंने समझाया कि हमें अपनी चेतना को और अधिक शुद्ध तथा संवेदनशील बनाना होगा जिसके लिए हम ध्यान करते हैं। अहमदाबाद में उन्होंने 'एसोटोरिक सिम्बल पैन्डेन्ट' के विषय में जानकारी दी जिसका सीमित संस्करण उपलब्ध है। वे विभिन्न केन्द्रों के अभ्यासी दलों से मिले।

१६ सितम्बर को वे कमालपुर गए तथा मंगलवार को वे भावनगर के लिए रवाना हो गए। जब एक प्रश्न–उत्तर के सत्र में उनसे पूछा गया कि गुरुदेव के साथ बिताए गए क्षणों में उनके लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण क्षण कौनसा रहा है, तब उन्होंने कहा कि जब उन्हें गुरुदेव का उत्तराधिकारी घोषित किया गया। इसके पश्चात वे बड़ौदा तथा सूरत के लिए रवाना हो गए।

सूरत में प्रश्न–उत्तर के सत्र में उन्होंने साधना के कई पहलुओं के विषय में समझाया। उन्होंने सूरत केन्द्र के लिए एक अभ्यासी द्वारा ध्यान–कक्ष तैयार कराके भेंट में देने के प्रस्ताव को स्वीकार किया। इसके पश्चात वे नवसारी आश्रम गए तथा उनकी यात्रा का अगला पड़ाव वलसाड़ केन्द्र था। अभ्यासियों से मिलकर तथा सत्संग कराकर उस रात वे बड़ौदा लौट आए।

२१ सितम्बर को पूरे गुजरात से करीब १००० अभ्यासी बड़ौदा में एकत्रित हुए। रविवार का सत्संग कराने के बाद भाई कमलेश ने एक वार्ता दी। इस वार्ता में उन्होंने हमारी साधना का सूक्ष्म विज्ञान के साथ संबंध के विषय में बताया। अगले दिन वे आनन्द गए तथा २५ सितम्बर को अहमदाबाद लौट आए। २७ सितम्बर को वे अदलाज आश्रम गए जहाँ उन्होंने 'जी आई टी पी' कार्यक्रम का उद्घाटन किया। इस कार्यक्रम में गुजरात, राजस्थान, महाराष्ट्र तथा मध्य–प्रदेश से आए ७५ अभ्यासियों ने भाग लिया।

३० सितम्बर को उन्होंने कड़ी केन्द्र में सत्संग कराया जिसमें कड़ी, पालनपुर, मेहसाना, कलोल तथा उन्झा से आए करीब १२५ अभ्यासियों ने भाग लिया। इन अभ्यासियों में से काफ़ी नए अभिलाषी थे। भाई कमलेश ने उन्हें इस प्रकार के सूक्ष्म तंत्र (सहज–मार्ग) को जीवन में अपनाने के महत्व को समझाया। तत्पश्चात, अहमदाबाद रवाना होने से पहले, उन्होंने कलोल में अभ्यासियों के साथ कुछ समय बिताया। २ अक्टूबर को उनकी गुजरात यात्रा समाप्त हुई तथा वे चेन्नई लौट गए।

आश्रम प्रबंधन कार्यक्रम

देशभर से आये हुए लगभग पैंतालिस आश्रम मैनेजर, अभिलाषी स्वंयसेवक एवं केन्द्र प्रभारीयों के लिये मणपाक्कम में २० से २४ अगस्त तक पाँच दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन था। यह मालिक द्वारा प्रेरित था, उन्होनें इंगित किया था कि वह आश्रम प्रबंधन के लिये पेशेवर दृष्टिकोण देखना चाहेंगें। प्रतिदिन एक मूल विषय था– जो कि हमारे आश्रमों के लिये एक दृष्टिकोण, आश्रमों के प्रभावीय उपयोग पर विचार, आध्यात्मिक जिज्ञासुओं की सेवा के लिये हमारे आश्रमों की सुव्यवस्था, हमारे आश्रमों का संचालन और आपसी विश्वास की सभ्यता के कोमल पक्ष और हमारे आश्रमों की कार्यपद्धति में आदरभाव पैदा करता था। कार्यक्रम में सत्संग, वार्तायें, प्रस्तुतिकरण, मालिक की विडियो रिकोर्डिंग, सामूहिक चर्चायें, और सबसे महत्वपूर्ण, मणपाक्कम आश्रम में बत्तीस विभागों का भ्रमण था।

दूसरे दिन, भाई कमलेश ने आश्रम की उन्नति के लिये संभावित क्रियाकलाप और स्वागत करता हुआ व गरमजोशी से परिपूर्ण वातावरण को पैदा करने के लिये हमें प्रयास करना चाहिये पर अपने विचार साझा किये। स्वास्थ्य ख़राब होने के बावजूद, गुरुदेव ने प्रतिभागियों को आख़िरी दो दिन सम्बोधित किया। अन्तिम दिन, सत्संग कराने के बाद, उन्होनें एक वार्ता दी जिसमें उन्होंने जोर दिया कि आश्रम रखरखाव प्रत्येक व्यक्ति के आन्तरिक रखरखाव से शुरु होता है, यानि कि हममें से प्रत्येक को अपने स्वयं के दिलों से आश्रम बनाना चाहिये। उन्होने कहा कि आश्रम रखरखाव जीवन के सहज मार्ग तरीके की संपूर्णता को प्रस्तुत करता है।

नया केन्द्र– पचोर, मध्यप्रदेश

मध्यप्रदेश में राजगढ़ जिले के पचोर में पचोर एवं आसपास के ग्रामों से लगभग १५० जिज्ञासुओं के लिये २ अक्टूबर को एक खुले सत्र का आयोजन किया गया। बहन रुचि श्रीवास्तव द्वारा आरम्भिक संबोधन के बाद, भाई प्रभाकर दास ने अध्यात्म की आवश्यकता, सहज मार्ग के गुरुओं, एवं मिशन द्वारा दी जा रही सेवाओं के बारे में बताया। इसके उपरान्त एक अनौपचारिक सत्र हुआ, जिसके बाद पच्चीस जिज्ञासुओं ने अभ्यास शुरु करने की इच्छा जाहिर की। उन्हें अभ्यास के प्रति उनकी भूमिका व अपेक्षित प्रतिबद्धता के बारे में विस्तारपूर्वक बताया गया। इनमें से दस जिज्ञासुओं ने तुरन्त व बाकी ने अगले हफ़्ते में सिटिंग्स लीं। इस प्रकार म.प्र. के इस भाग में प्राकृतिक तौर पर एक नया केंद्र बन गया।

कोलाकालुरु, आ.प्र. में श्रेत्रीय आश्रम

विजयवाड़ा, गुन्टुर, तेनाली एवं मंगलागिरी से अभ्यासियों की आध्यात्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये एम.जी.ब्रदर्स रि–यल एस्टेट ने खाजीपेट, गुंटुर में लगभग पचास एकड़ भूमि अधिग्रहित की थी। लगभग १८.७५ एकड़ भूमि आश्रम के लिये व बाकी भूमि अभ्यासियों के लिये श्री पार्थासारथी नगर आवासीय कालोनी के लिये चिन्हित की गयी थी।

मालिक के आशीर्वाद से २ फरवरी २०१२ को भाई मधुकोथापल्ली (जोनल प्रभारी) ने नींवपत्थर स्थापित किया। मालिक द्वारा ८ सितम्बर को प्रात: ११.०० बजे चैन्नई से सीधे प्रसारण द्वारा आश्रम का उद्घाटन हुआ व उसे पूज्य बाबूजी महाराज को समर्पित किया गया। मालिक ने कहा, "आश्रमों का उपयोग होना चाहिये व उन्हें छात्रविहीन स्कूलों के समान नहीं होना चाहिये।" कोलाकालुरु के अभ्यासियों ने उत्साहित हृदयों से इस अवसर को मनाया। यहाँ पर अब नियमित सत्संग और पूर्ण दिवसीय कार्यक्रम होते हैं।

युवा कार्यक्रम

अहमदनगर, महाराष्ट्र

६ अक्तूबर को बाइस युवाओं के एक समूह ने बहिनों द्वारा पकाये हुए स्वादिष्ट भोजन को खाने के उपरान्त एफर्ट्स ताराघर का भ्रमण किया। ताराघर पहुँचकर, पंजीकरण के उपरान्त, परिचय का क्रम हुआ। तत्पश्चात मिशन के साहित्य से संबंधित शब्दों पर आधारित एक मौन पहेली का आयोजन किया गया। यह खेल बिना शब्दों के, मात्र हृदय द्वारा अपने विचारों को व्यक्त करने का सम्पूर्ण उदाहरण था। इसके बाद ताराघर में नियमित कार्यक्रम सम्पन्न हुआ, जो बहुत ही शिक्षाप्रद था जिसमें आकाश गंगा, ग्रह तथा सितारों की विस्तृत जानकारी दी गयी। इस सैर से अभ्यासियों के बीच भाईचारा तथा जुड़ाव बढ़ाने में मदद मिली।

भीलवाड़ा, राजस्थान

मासिक युवा कार्यक्रम के अन्तर्गत ,२५ अगस्त को बारह युवा एवं दो बच्चों ने हरनी महादेव में एक पिकनिक कार्यक्रम में भाग लिया। सहभागियों ने अपने विचारों द्वारा बताया कि कैसे उन्होंने सहज मार्ग साधना प्रारम्भ की तथा उनका लक्ष्य क्या था जिससे इस सच्चाई का ज्ञान हुआ कि वे जीवन के वास्ताविक लक्ष्य से अनभिज्ञ थे। इस विषय पर मिशन के साहित्य में उपलब्ध उद्धरणों को पढ़ा गया। यह महसूस किया गया कि इस विषय को और अधिक महत्व देने की आवश्यकता है। इसलिये यह निश्चित किया गया कि सभी युवा प्रत्येक रविवार को सत्संग के उपरांत १५–२० मिनट ध्यानकक्ष में रुकेंगे तथा अपने अनुभव बाँटेंगे।

संयुक्त राष्ट्र अन्तर्राष्ट्रीय युवा दिवस – वेबिनार (इंटरनेट परिसंवाद)

१२ दिसम्बर २००५ को श्री राम चन्द्र मिशन ने अपने आपको, संयुक्त राष्ट्र के लोक सूचना विभाग के साथ, एक गैर सरकारी संस्था के रूप में जोड़ा। इसका मुख्य उद्देश्य, आपसी प्रेम एवं सार्वभौमिक भाईचारे की भावना को बढ़ाना था, जो किसी जाति, रंग, धर्म, राष्ट्र एवं लिंग में भेद न करता हो।

"सार्वभौमिक प्रार्थना– प्रेम परिवर्तन का उत्प्रेरक" विषय पर १७ अगस्त २०१३ को एक वेब विचार गोष्ठी का आयोजन यू एन अन्तराष्ट्रीय युवा दिवस मनाने के लिये किया गया, जिसमें विभिन्न समय क्षेत्र के ४६४९ प्रतिभागी शामिल हुए। यह कार्यक्रम साओ पाउलो, ब्राजील के भाई आंद्रे बरेटो द्वारा परिचय से प्रारम्भ हुआ। इस के बाद युवाओं को सम्बोधित गुरुदेव की एक लघु वार्ता प्रस्तुत की गयी। पेरिस की बहिन एकता बाउडर्लिक ने मिशन के यु.एन.डी.पी.आई. से सम्बन्ध पर एक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। भाई ऋषभ कोठारी ने १७ नवम्बर १९९९ को बाबूजी महाराज द्वारा विस्पर में दिये गये सन्देश को पढ़ा, तत्पश्चात उन्होंने सेमिनार के मूल विषय पर भाषण दिया।

मुख्य भाषण के पश्चात, भाई ऋषभ तथा बहन एकता ने सहभागियों के प्रश्नों के उत्तर दिये। इस कार्यक्रम ने युवाओं को अपने अनुभव एवं चुनौतियों को व्यक्त करने का मंच प्रदान किया। मणपाक्कम में, लालाजी मेमोरियल ओमेगा अंतराष्ट्रीय स्कूल (एल. एम.ओ. आई. एस.) से आये १५० विद्यार्थियों सहित २०० प्रतिभागी एकत्रित हुए।

कार्यक्रम के अंत में सार्वभौमिक प्रार्थना का आयोजन हुआ, जो बहुत ही मार्मिक क्षण था, जिसने गोष्ठी को क्रियात्मक रूप प्रदान किया। विश्व की समस्त संस्कृतियां प्रार्थना के महत्व को एक साधन के रूप में, स्वीकार करती हैं, जिससे प्यार के साथ परिवर्तन लाया जा सकता है। जिन लोगों ने विश्व के विभिन्न केन्द्रों एवं आश्रमों में कार्यक्रम के बाद प्रार्थना में भाग लिया, सूचित किया कि उन्होंने एक बेहतर विश्व के निर्माण में अपने आप को सम्बद्ध तथा विचारों में समर्थित महसूस किया है।

प्रशिक्षकों की मीटिंग

त्रिची, तमिलनाडू

२१ सितंबर की मीटिंग में अखिल भारत के प्रभारी भाई राजेश राठोड़ सहित तमिलनाडू (ज़ोन २ए) के ज़ोनल प्रभारी भाई मुरुगन और विभिन्न भागों से प्रशिक्षक त्रिची में उपस्थित थे। दिन का आरम्भ प्रातः ०७:३० बजे के सत्संग से हुआ। तदोपरांत त्रिची में 'प्रशिक्षक का गहन अनुभव' कार्यक्रम के दौरान २३ जनवरी २०१३ को दी गई मालिक की वार्ता 'सिटिंग्स कैसे दी जाएं' को एक वीडियो द्वारा दिखाया गया। 'आपके अनुसार आपके केंद्र में सर्वोत्तम क्या है?' और 'विगत वर्ष में किन नई चीजों से आपके केंद्र में बदलाव आया?' – इन दो विषयों पर एक समूह परिचर्चा हुई और प्रत्येक ने अपने अनुभव बताए। इस फलदाई चर्चा ने प्रत्येक को अन्य केन्द्रों से सीखने का अवसर दिया। इसके उपरान्त भाई मुरुगन ने ज़ोन २ए से संबंधित समग्र डाटा, इसके क्रियाकलाप तथा प्रत्येक उपस्थित से क्या अपेक्षाएं थी पर एक प्रस्तुति दी। दोपहर के समय संबंधित क्षेत्रों और अवसरों पर परिचर्चा हुई। भाई राजेश ने अनेक बातों का स्पष्टीकरण दिया। 'अच्छे प्रशिक्षक कैसे बन सकते हैं' इस विषय पर मालिक की एक वीडियो दिखाई गई। कार्यक्रम की समाप्ति शाम के ०६:०० बजे के सत्संग से हुई।

लखनऊ, उत्तर प्रदेश

२८–२९ सितंबर को भाई यू.एस.वाजपेयी (सचिव) की उपस्थिति में ज़ोनल स्तर की दो दिवसीय बैठक का आयोजन लखनऊ के बाबूजी मेमोरियल आश्रम में उत्तर प्रदेश (मध्य) ज़ोन के लगभग १०० प्रशिक्षकों के लिए किया गया। भाई अशोक गर्ग (ज़ोनल प्रभारी) ने प्रशिक्षकों का स्वागत किया और कार्यशाला से लाभान्वित होने के लिए हृदय को खुले रखने की आवश्यकता पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए कहा। मालिक की वार्ताओं की तीन डी.व्ही.डी.– 'निपुण प्रशिक्षक बनना', 'सिटिंग्स कैसे दें', और 'अनुशासन की आवश्यकता' पर दिखाई गईं। भाई जस्टिस आर.आर.के.त्रिवेदी 'प्रशिक्षक की भूमिका' इस विषय पर बोले, भाई के.के.सक्सेना ने 'प्रशिक्षक गाईड' से बिंदु प्रस्तुत किए, भाई आशीष सिंह ने प्रशिक्षकों को इस बात के लिए प्रेरित किया कि वे अभ्यासियों को प्रेम, भाईचारे व समुदाय के लिए समर्पण व निष्ठावान बनाएं और बहन प्रियदर्शिनी 'प्रशिक्षक के गहन अनुभव' इस विषय पर बोलीं। उपरोक्त त्रिची कार्यक्रम पर आधारित था। भाई पी.गुलिया और भाई आर.एस.एल. श्रीवास्तव ने केन्द्रों के इतिहास पर कैसे कार्य करें इस विषय पर व्याख्यान दिया। ज़ोनल प्रभारी भाई अशोक गर्ग ने केन्द्रों की अपनी भ्रमण ब्यौरे की रिपोर्ट प्रस्तुत की। इस कार्यशाला के आयोजन के लिए भाई अशोक गर्ग का धन्यवाद करते हुए भाई यू.एस.वाजपेयी ने कार्यक्रम का अंतिम सार प्रस्तुत किया। सभी प्रशिक्षक परिपूर्ण संप्रेषण सहित निपुण प्रशिक्षक बनने की प्रतिबद्धता के साथ अपने केन्द्रों को वापिस गए।

मैंगलोर, कर्नाटक

भाई मोहनदास ने एक सितंबर को 'अपनी आध्यात्मिक स्थिति कैसे पढें' इस विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया। उन्होंने जागरुकता एवं संवेदनशीलता को डायरी लेखन अभ्यास द्वारा विकसित करने की आवश्यकता पर व्याख्यान दिया। उन्होंने बताया कि अभ्यासियों को डायरी में, समय तथा स्थान के बारे में, और सत्संग के दौरान तथा बाद में गहराई, लय, शान्ति और सौम्यता की अनुभूति को लिखना चाहिए। उन्होंने यह भी बताया कि डायरी लेखन हमारी व्यक्तिगत सफाई के लिए एक प्रभावी यंत्र व हमारी अंतरप्रेरणा को जागृत करने का यंत्र भी है। उन्होंने बताया कि आध्यात्मिक स्थिति और अनुभव किस प्रकार भिन्न हैं और आध्यात्मिक स्थिति एक अवस्था है। 'तड़प को विकसित करने के साधन और तरीके' पर एक परिचर्चा सत्र हुआ। अभ्यासियों ने अपनी पहली तीन सिटिंग्स से पहले और बाद के अनुभव बताए। भाई मोहनदास ने साधना में उचित रवैया बनाए रखना, विशेष तौर पर यांत्रिक अभ्यास से बचना परन्तु इसे अपने हृदय के पूर्ण समायोजन से करने की आवश्यकता पर व्याख्यान दिया। हमें यथासंभव प्रायः मालिक से मिलना चाहिए और अपने अंतःसंपर्क एवं संबंध बनाए रखना चाहिए जो हमारी तड़प को विकसित करने का विश्वसनीय साधन है।

मनन कार्यक्रम – तिपतुर, कर्नाटक

सितंबर १४ व १५ को तिपतुर कर्नाटक में "साधने चिंतने शिविर" कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य अभ्यासियों को उनके रीति रिवाजों से उपर उठने में, उनकी कमियों को दूर करने में सहायता करने, तथा उनकी साधना में उनकी जागरूकता पैदा करने व उनके व्यक्तिगत चरित्र निर्माण के आत्मनिरीक्षण करवाने में था। इस कार्यक्रम में लगभग ४० अभ्यासियों ने भाग लिया। अभ्यासियों ने महसूस किया कि इस कार्यक्रम ने मिशन प्रणाली व साधना को अच्छी तरह समझने में उनकी सहायता की है। कार्यक्रम के बाद अभ्यासियों की प्रतिक्रियाएं आयोजकों को प्रोत्साहित करने वाली थी। इस कार्यक्रम का संचालन भाई बी. श्रीनिवास व डॉ. कृष्णमूर्ति ने किया था।

थुमकुन्टा आश्रम, हैदराबाद

महिने के प्रथम शनिवार को होने वाला मिलन समारोह इस आश्रम में आयोजित होता है। अक्टूबर ५ को कार्यक्रम ने द्वितिय वर्ष पूर्ण किया था। इस सत्र में आम तौर पर मालिक के विडियो, सहज मार्ग के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा करना, वक्ताओं द्वारा प्रस्तुतिकरण करना, व्हिसपर के संदेश पढ़ना व चयनित चलचित्रों का प्रदर्शन शामिल होता है। इसके अलावा, वे अभ्यासी जो मालिक से मिलकर व क्रेस्ट और रीट्रीट केन्द्र में रहकर आते हैं अपने अनुभव सुनाते हैं। इस तरह के कार्यक्रम यहां रहने वाले अभ्यासियों के बीच बेहतर रिश्ते बनाने में सहायक होते हैं व साथ ही उनमें एकता की भावना लाते हैं। यहां रहने वाले अभ्यासी इस कार्यक्रम में बड़े उत्साह के साथ भाग लेते हैं।

कुम्भकोणम, तमिलनाडु

'साहित्य से सीख' कार्यक्रम को विभाग प्रमुख भाई बी. मुरुगन ने प्रस्तावित किया था। इस कार्यक्रम का उद्देश्य मिशन का साहित्य पढ़ने में रुचि बढाने के साथ साथ एक ऐसा अवसर प्रदान करना था जिसमें सब मिलजुलकर कार्य व उन्नति कर सकें।

यह कार्यक्रम सबसे पहले त्रिचि में २७ जुलाई को संचालित किया गया था जिसमें २२ केन्द्रों से आये लगभग ६० अभ्यासियों ने हिस्सा लिया था। जोन को १४ विभागों में इस तरह बांटा गया था कि हर विभाग में ५ से ६ केन्द्र व एक संचालक हो। विभाग ५ जिसमें कुम्भकोणम, कराईकल, तिरुवरुर, नगपट्टिनम, कुड्वासल व मईलादुथुरई शामिल थे, ने अपना पहला सत्र ८ सितंबर को कुम्भकोणम में आयोजित किया। इस दौरान २३ अभ्यासियों ने "सत्य का उदय" को पढ़ा। सभी सहभागियों ने इस किताब को पढ़ने में काफ़ी रुचि दिखाई व ऐसा लगा कि इस कार्यक्रम के ज़रिये अभ्यासियों में मिशन के साहित्य के प्रति समझ बढ़ी है।

अंजड, मध्य–प्रदेश

८ सितंबर को अंजड केन्द्र में सहज मार्ग के विभिन्न पहलुओं पर एक कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें एक विशेष सत्र "अपनी अवस्था का अवलोकन व अवलंबन" भी सम्मिलित था। अंजड, दवाना, ठीकरी व बढ़वानी से आये करीब ४० अभ्यासियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन इन्दौर केन्द्र से आये भाई राजेश, शैलेन्द्र व निलेश शर्मा ने किया। इस दौरान अपने लक्ष्य को निर्धारित करने के महत्व पर चर्चा हुई। एक लघु आत्मनिरिक्षण सत्र "वर्तमान में मैं अपना ध्यान व सफ़ाई कैसे कर रहा हूँ" के बाद मालिक द्वारा बताई गई विधि प्रस्तुत की गई, जो अभ्यासियों को अपनी त्रुटि सुधार करने में सहायक हुई।

एक अन्य सत्र जिसमें अब्यासियों को अपनि स्थिति बनाये रखने का महत्व सिखाया गया। इसके अन्तर्गत उन्हें पहले अपनी स्थिति का कुछ देर तक अवलोकन करने को कहा गया, तत्पश्चात उन्हें १५ मिनिट ध्यान में बैठने को कहा गया, उसके बाद कुछ देर तक शांत बैठकर अपनी स्थिति में आये परिवर्तन पर गौर कर फिर उन्हें डायरी में लिखने को कहा गया। इस सत्र में सभी को अपनी संवेदनशीलता में वृद्धि व सजगता का अहसास हुआ।

झलकियाँ

कोलकता

लाजपत बालिका विद्यालय से लगभग अठावन छात्राओं ने ७ सितम्बर २०१३ को उनकी चार शिक्षिकाओं व उप–प्राचार्य के साथ बाबूजी मेमोरियल आश्रम, कोलकता का भ्रमण किया। उनको वी.बी.एस.ई. के समय प्रबन्धन, मान–वता और करुणा जैसे प्रकरणों पर कुछ प्रयोग दिखाये गये। शिक्षिकाओं और विद्यार्थियों ने मिशन के साथ ऐसे और अ–धक पारस्परिक संवादों की इच्छा व्यक्त की। कुछ शिक्षिकाओं ने मिशन का अभ्यास प्रारम्भ करने में रुचि प्रदर्शित की।

कोलकता

२२ सितम्बर के दिन बच्चों को दो वय वर्गों में विभाजित कर उन्हें कुछ कार्यकलाप दिये गये जैसे प्रार्थना को कण्ठस्थ सुनाना, प्रार्थना या मिशन के दस नियमों को बिना देखे लिखना। बड़े बच्चों ने प्रेम, अनुशासन और ध्यान जैसे विषयों पर लघु निबन्ध लिखे। लगभग सत्तर बच्चों ने इस स्पर्धा में उत्साह के साथ भाग लिया। इस कार्यक्रम ने बच्चों के साथ साथ उनके माता–पिता को भी प्रार्थना तथा दस नियमों को याद रखने के लिये प्रोत्साहित किया।

वडोदरा

१३ अक्टूबर को नवरात्रि पर्व मनाते हुये बिट्टू भाई ने चिल्ड्रन सेन्टर के स्वयंसेवकों सहित 'गर्बा' नृत्य का आयोजन किया। सत्संग के पश्चात रंगीन 'गर्बा' पोशाकों में बच्चों ने नृत्य किया, जिसमें उनके माता पिता तथा अग्रज भी सम्मिलित हुए। यह वास्तव में मजेदार था और इसने आनन्द की अनुभूति उत्पन्न की।

मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश

डायरी लेखन पर २९ सितम्बर को एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। तीन समन्वयकों द्वारा अठ्ठाईस प्रतिभागियों के लिये, जो तीन समूहों में विभाजित किये गये थे, इस कार्यशाला का संचालन किया गया। सभी प्रतिभागियों के लिये यह आनन्ददायक अनुभव था तथा अधिकतम ने ऐसी अनुभूति की कि जब कभी हम अपनी अवस्था के बारे में डायरी में लिखते हैं, तो गुरुदेव द्वारा यह स्वयमेव ही पढ़ ली जाती है। यह सत्र दोपहर २:३० बजे तक चला।

इन्दौर, मध्य प्रदेश

३१ अगस्त के दिन छः अभ्यासी गुरुदेव के साथ सम्पर्क कड़ी विकसित करने हेतु आत्मावलोकन के लिये इन्दौर आश्रम में एकत्र हुए। 'सार्वभौमिक सन्देश' पुस्तक में से गुरुदेव की वार्ता का एक अंश पढ़ा गया। यह सन्देश गुरुदेव को अपने आध्यात्मिक हृदय के रूप में देखने और उन्हें अपने अन्तर्तम में अनुभव करने की आवश्यकता के बारे में था। अभ्यासियों को अपना आत्मावलोकन करने तथा अपने अनुभवों को डायरी में लिपिबद्ध करने के लिये कहा गया ।

चिखली, महाराष्ट्र

करीब पैंसठ अभ्यासियों के लिये ६ अक्टूबर के दिन 'सतत स्मरण' पर एक पूरे दिन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। सभी अभ्यासी तैयार होकर आये थे तथा उन्होंने विभिन्न प्रश्न पूछे जिससे एक शिक्षाप्रद परिचर्चा हुई। केंद्रप्रमुख बंधू संजय लाहोटी ने कार्यक्रम का समारोप किया।

चिखली केन्द्र पिछले दो माह से एक नया कार्यक्रम आयोजित कर रहा है। माह के तीसरे रविवार में उपस्थित अभ्यासियों को दस समूहों में विभाजित किया जाता है। प्रत्येक समूह को एक पुस्तक दी जाती है जिस में से उन्हें दो विशेष अध्यायों का अध्ययन करना होता है। भोजन के दौरान भाई तुलसीराम उन प्रत्येक दो अध्यायों से सम्बन्धित दस प्रश्न छाँटते हैं और एक प्रश्नावली तैयार करते हैं। अपराह्न के सत्र में, समूहों को यह प्रश्नावलियाँ एक घन्टे के अन्दर उनका उत्तर देने के लिये दे दी जाती हैं। उसके पश्चात प्रत्येक समूह प्रश्न और उनके उत्तर प्रस्तुत करता है। यह कार्यक्रम लगभग दो घण्टे चलता है तथा अभ्यासियों को मिशन की पुस्तकें पढ़ने में सहायक होता है।

जनसभा सत्र

१२ सितम्बर को **थाना** में शुभारम्भ टॉवर में लगभग बीस अभिलाषियों की एक जनसभा में ईश्वर को मूर्तियों के रुप में बाहर खोजने की अपेक्षा अपने हृदय में पाने के महत्व और ध्यान की सहायता से इसे कैसे प्राप्त किया जा सकता है, के बारे में बताया गया। ५–६ प्रतिभागियों ने सकारात्मक इच्छा दिखायी।

१७ अगस्त को कामराज कॉलेज ऑफ इन्जीनियरिंग एण्ड टेक्नोलोजी **विरुधुनगर** में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें लगभग १५० छात्रों ने भाग लिया। भाई टी. के. अरुमुगम और भाई बालासुब्रमण्यम ने इस अवसर पर वार्तायें दी। बाद में अभ्यासी प्रधानाचार्य से मिले, जिन्होंने इस पद्धति में गहरी रुचि दिखायी। उन्होंने कहा कि वे इच्छुक छात्रों के लाभ के लिये जल्दी से जल्दी कॉलेज में ध्यान का अभ्यास शुरु करवाने के लिये आवश्यक इन्तजाम करेंगे।

झाबुआ– पिछले कई वर्षों से एक दर्जन से भी कम अभ्यासियों वाले केन्द्र झाबुआ में १ सितम्बर को ४०० आदिवासी छात्रों की एक आवासीय संस्था सरकारी पोलीटेक्नीक कॉलेज झाबुआ (म. प्र.) में एक सत्र आयोजित किया गया। भाई प्रभाकर ने छात्रों को आध्यात्मिक्ता और ध्यान का महत्व उदाहरणों के साथ समझाया। ९८ छात्रों ने अभ्यास आरम्भ किया और प्रारम्भिक सिटिंग के लिये विभिन्न केन्द्रों से प्रशिक्षक अगले सप्ताह झाबुआ पहुँचे।

नयी नियुक्तियाँ

भाई सुरिन्दर शर्मा
ज़ोनल प्रभारी–जम्मू और कश्मीर

होसुर अभ्यासी कॉलोनी

अच्छी परियोजना और उसके कार्यान्वयन का एक उदाहरण

अभ्यासियों के उत्कृष्ट जीवन के लिये पर्याप्त बुनियादी संरचना और अच्छे माहौल के साथ तेजी से बनती हुयी यह आवासीय कॉलोनी दूसरी अभ्यासी कॉलोनियों के लिये एक उदाहरण है। विस्तृत वित्तीय योजना और अभ्यासियों के सामूहिक प्रयासों का परिणाम होसुर में आश्रम से सटी हुयी यह आदर्श कॉलोनी है।

होसुर बैंगलोर से केवल पच्चीस किलोमीटर पूर्व में तमिलनाडू सरकार द्वारा समर्थन प्राप्त एक औद्योगिक केन्द्र है। होसुर में आश्रम के लिये ज़मीन की खोज बहुत समय पहले १९९५ में हुयी थी। खोज का परिणाम २००९ में होसुर बस–अड्डे से ५ किलोमीटर की दूरी पर केलावरापल्ली बाँध के सामने अवलापल्ली गाँव में मिला। भाई सी. राजगोपालन ने जो उस समय ज़ोनल प्रभारी थे, उस स्थान का दौरा किया और आगे की कार्यवाही के लिये अपनी स्वीकृति दे दी।

उनका स्वप्न

बहुत सालों पहले जब एक अभ्यासी होसुर आश्रम के लिये ज़मीन दान करना चाहता था, गुरुदेव ने विनम्रता से उत्तर दिया था, "होसुर को कई एकड़ जमीन की आवश्यता है"। उनका स्वप्न तब पूरा हुआ जब उनके आशीर्वाद से १३.८ एकड़ ज़मीन ले ली गयी जिसमे से ४.७५ एकड़ ज़मीन आश्रम के लिये आरक्षित कर दी गयी और बाकी अभ्यासियों की कॉलोनी के लिये रख ली गयी। आश्रम की

ज़मीन का पंजीकरण २२ जनवरी को मिशन के संयुक्त सचिव भाई ए.पी. दुरई ने कराया। गुरुदेव सामूहिक कार्य से बहुत खुश थे और उन्होंने आवासीय परिसर का नाम 'प्रगति एनक्लेव' रखा।

मुख्य दल

वित्त, बुनियादी संरचना और कानूनी विषयों पर निर्णय लेने के लिये सात सदस्यों का एक मुख्य दल गठित किया गया। दल ने अभ्यासियों के साथ समन्वय स्थापित किया और आपसी विचार विमर्श के पश्चात निर्णय लिये। उन्होंने भूमि की लागत, आवासीय संरचना, आश्रम की भूमि खरीदने के लिये दान, आश्रम संरचना और भविष्य में उसके रख–रखाव को ध्यान में रखते हुए भूखंडों की लागत निर्धारित करने के लिये रुप–रेखा तैयार की।

बुनियादी संरचना

इस योजना में लगभग २४०० वर्ग मीटर के १०२ भूखंड हैं। वर्तमान में स्थित बुनियादी संरचना में अहाते की दीवार, बारीश के पानी की निकासी के लिये नाला, १ लाख घन लीटर क्षमता वाली ऊपरी पानी की टंकी, २ पानी के कुएं (बोरवेल), सभी भूखंडों के लिये पानी के कनेक्शन, कंक्रीट की सड़क, सामुदायिक हॉल (वर्तमान में इसका उपयोग ध्यान कक्ष के रूप में किया जा रहा है), बच्चों के लिये खेल का मैदान, सामूहिक पार्क इत्यादि उपलब्ध हैं। लगभग ७०० छायादार पेड़ों के लगने से आश्रम की सुन्दरता और भी ज़्यादा हो गयी है। प्रत्येक भूखंड के लिये विद्युत कनेक्शन का भी प्रावधान किया गया है। एक जर्मन शेफर्ड कुत्ते के द्वारा २४ घंटे आश्रम की सुरक्षा की जाती है।

भावी योजनाओं में पूरे परिसर में सोलर लैम्प की स्थापना और बारिश के पानी का संग्रहण करना है।

सामाजिक जीवन

तीन वर्ष के छोटे से अन्तराल में परिसर मे १० मकानों का निर्माण पूरा हो चुका है, दो मकान निर्माणाधीन है तथा कुछ और मकानों के निर्माणकार्य के शीघ्र आरम्भ होने की आशा है। अभ्यासी आश्रम के वातावरण में रहने के लिये बहुत प्रसन्न हैं । प्रत्येक अभ्यासी यह मानता है कि गुरुदेव द्वारा प्रदान कराया गया भाईचारा और सहनशीलता विकसित करते हुये एक विशाल परिवार की तरह साथ–साथ रहने का यह एक महान अवसर है। निर्मल और शान्त वातावरण अभ्यासियों के आत्म

निरिक्षण और शुद्धिकरण में सहायता करता है जिससे वे आदर्श अभ्यासी बनने की दिशा में अग्रसर हो सके। सामान्यत: सभी का यह अनुभव कि एक बार परिसर में आने के बाद उनकी बाहर जाने की इच्छा नहीं होती। सभी के साथ रहने का सबसे ज्यादा आनन्द बच्चे उठा रहे हैं क्योंकि उन्हें खेलने और खोजने के लिये प्राकृतिक स्थान मिल रहा है और संतुलित वातावरण में रहते हुये एक–दूसरे के साथ घुलने–मिलने का अवसर मिल रहा है।

आश्रम की भूमि पर उगायी जाने वाली मौसमी सब्जियों और अनाज की अभ्यासियों की सहायता से देखभाल की जाती है। अभ्यासी व्यक्तिगत बागों में पैदा की गयी सब्जियां आपस मे बाँटते हैं। ऐसे सामाजिक वातावरण में रहने का मुख्य लाभ यह है कि सभी अभ्यासी एक समान लक्ष्य, उच्चस्तरीय भाईचारा, आपसी विश्वास और सहनशीलता प्राप्त करने की कोशिश कर रहे हैं। ऐसा निर्मल, शुद्ध और प्राकृतिक वातावरण किसी भी आगन्तुक के लिये स्वागत योग्य है।

आश्रम परियोजना

गुरुदेव ने आश्रम के निर्माण के लिये अपनी स्वीकृति दे दी है। अंतिम रुपरेखा और स्वीकृति मुख्यालय में जारी है जिसमें ध्यान कक्ष, शयनगृह और भोजन कक्ष शामिल है। वर्तमान में सत्संग एक अस्थायी कक्ष में आयोजित किया जाता है जिसे बाद में किसी और कार्य के लिये इस्तेमाल किया जायेगा। इसी प्रकार अस्थायी रसोई और आगन्तुक कक्ष भी स्थापित किये गये हैं। अन्य केन्द्रों/आश्रमों के कॉलोनी निर्माण के आयोजकों को इस कॉलोनी और आश्रम को देखने से लाभ होगा।

To download or subscribe to this newsletter, please visit http://www.sahajmarg.org/newsletter/india For feedback, suggestions and news articles please send email to in.newsletter@srcm.org
© 2013 Shri Ram Chandra Mission ("SRCM"). All rights reserved. "Shri Ram Chandra Mission", "Sahaj Marg", "SRCM", "Constant Remembrance" and the Mission's Emblem are registered Trademarks of Shri Ram Chandra Mission.This Newsletter is intended exclusively for the members of SRCM. The views expressed in the various articles are provided by various volunteers and are not necessarily those of SRCM.